सूरह — एक कहानी

सूरह या-सीन

या सीन

पूरा सफ़र — क़ुरआन का दिल —

जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 36 • 83 आयतें • मक्की

नूरानी इल्म

nooraniilm.com • मुफ़्त सदक़ा-ए-जारिया ईबुक

एक नज़र में सूरह

या-सीन; वल्-क़ुरआनिल्-हकीम
1-2. या सीन। हिकमत वाले क़ुरआन की क़सम।

इन्ना नह्नु नुह्यिल्-मौता व नक्तुबु मा क़द्दमू व आसारहुम
12. बेशक हम मुर्दों को ज़िंदा करते हैं और जो उन्होंने आगे भेजा और उनके निशान लिखते हैं।

क़ीलद्-ख़ुलिल्-जन्नह; क़ाल या लैत क़ौमी य'अ्लमून
26. कहा गया: जन्नत में दाख़िल हो जा। उसने कहा: काश मेरी क़ौम जानती।

व कुल्लुन फ़ी फ़लकिंय्यस्बहून
40. और सब एक एक मदार में तैर रहे हैं।

सलामुन क़ौलम्-मिर्-रब्बिर्-रहीम
58. सलाम — एक रहीम रब की तरफ़ से एक बात।

इन्नमा अम्रुहू इज़ा अराद शै-अन अंय्यक़ूल लहू कुन फ़-यकून
82. उसका हुक्म तो बस ये है कि जब वो किसी चीज़ का इरादा करे तो उसे कहे: हो जा, और वो हो जाती है।

क़ुरआन का दिल

बेटा, इस सूरह का मुसलमानों के दिलों में वो मक़ाम है जो बहुत कम सूरहों को हासिल है। ये बीमारों पर पढ़ी जाती है, महफ़िलों में, घरों में जुम्मे की रातों को, हर उस सर-ज़मीन पर जहाँ मुसलमान रहते हैं।

ये यूँ खुलती है: '**या-सीन। वल्-क़ुरआनिल्-हकीम** — या सीन। **हिकमत वाले क़ुरआन** की क़सम — **इन्नक ल-मिनल्-मुर्सलीन** — **बेशक, तुम रसूलों में से हो** — '**अला सिरातिम्-मुस्तक़ीम** — **सीधे रास्ते** पर।'

बेटा, महसूस कीजिए ये आयतें आप ﷺ के लिए क्या मायने रखती थीं। मक्का उन्हें शायर, दीवाना, झूठा कह रहा था। और अल्लाह ने क़सम खाई — ख़ुद क़ुरआन की

— कि वो एक रसूल हैं, सीधे रास्ते पर। **कभी एक शख़्स को उस ज़ात से सुनने की ज़रूरत होती है जो मायने रखती है कि वो सही रास्ते पर है।**

'**तन्ज़ीलल्-'अज़ीज़िर्-रहीम** — **ग़ालिब, रहीम** की तरफ़ से एक नुज़ूल — **लि-तुन्ज़िर क़ौमम्-मा उन्ज़िर आबाउहुम फ़-हुम ग़ाफ़िलून** — ताकि तुम एक ऐसी क़ौम को **ख़बरदार** करो जिनके बाप-दादा ख़बरदार न किए गए, **तो वो ग़ाफ़िल** हैं।'

बेटा, ख़बरदारी की वजह ग़ौर कीजिए: **रहमत।** वो 'ग़ाफ़िलून' थे — बे-ख़बर — क्योंकि नस्लें एक रसूल के बग़ैर गुज़र चुकी थीं। अल्लाह ने उन्हें उस ख़ामोशी की सज़ा न दी; उन्होंने उसे तोड़ने के लिए किसी को भेजा।

'**इन्नमा तुन्ज़िरु मनित्-तब'अज़्-ज़िक्र व ख़शियर्-रह्मान बिल्-ग़ैब** — तुम सिर्फ़ उस को ख़बरदार कर सकते हो जो **नसीहत की पैरवी** करे और **बिन-देखे अर्-रह्मान से डरे** — **फ़-बश्शिर्हु बि-मग़्फ़िरतिंव्-व अज्रिन करीम** — तो उसे मग़्फ़िरत और एक मो'अज़्ज़ज़ अज्र की ख़ुशख़बरी दो।'

और फिर, बेटा, हर उस शख़्स के लिए एक आयत जो महसूस करता है कि उसकी ज़िंदगी कोई निशान नहीं छोड़ती: '**इन्ना नह्नु नुह्यिल्-मौता व नक्तुबु मा क़द्दमू व आसारहुम** — बेशक, **हम मुर्दों को ज़िंदा करते हैं और जो उन्होंने आगे भेजा और उनके निशान लिखते हैं** — **व कुल्ल शै-इन अह्सैनाहु फ़ी इमामिम्-मुबीन** — और हर चीज़ को हमने एक खुले दफ़्तर में गिन रखा है।'

बेटा, '**आसारहुम**' — उनके **निशान**, उनके क़दमों के निशान, वो असरात जो वो पीछे छोड़ते हैं। सिर्फ़ जो तुमने किया नहीं, बल्कि जो तुम्हारे **बाद** जारी रहा: वो बच्चा जिसे तुमने सिखाया, वो इल्म जो तुमने आगे पहुँचाया, वो आदत जो तुमने किसी में डाली, वो रास्ता जो तुम मस्जिद तक चले। **सब दर्ज।**

वो आदमी जो दौड़ता हुआ आया

और अब, बेटा, सूरह एक कहानी सुनाती है — और ये क़ुरआन की सब से दिल को छू लेने वाली छोटी कहानियों में से एक है।

'**वज़्रिब लहुम मसलन अस्हाबल्-क़र्यह इज़ जाअहल्-मुर्सलून** — और उनके लिए

एक मिसाल बयान करो: **बस्ती वाले**, जब उसके पास रसूल आए।'

दो भेजे गए, और रद्द किए गए; फिर एक तीसरे ने उन्हें तक़वियत दी। और लोगों ने वही घिसा-पिटा जवाब दिया: '**मा अन्तुम इल्ला बशरुम्-मिस्लुना** — तुम तो बस हमारे जैसे इंसान हो — **व मा अन्ज़लर्-रह्मानु मिन शै** — और अर्-रहमान ने कुछ नाज़िल नहीं किया — **इन अन्तुम इल्ला तक़्ज़िबून** — तुम तो बस झूठ बोल रहे हो।'

और फिर: '**इन्ना तत़य्यरना बिकुम** — बेशक, हम तुम्हें एक **बुरा शगुन** समझते हैं — **ल-इल्लम् तन्तहू ल-नर्जुमन्नकुम व ल-यमस्सन्नकुम मिन्ना 'अज़ाबुन अलीम** — अगर तुम बाज़ न आए तो हम तुम्हें ज़रूर **संगसार** करेंगे और हमारी तरफ़ से तुम्हें दर्दनाक अज़ाब पहुँचेगा।'

बेटा, रसूलों ने जवाब दिया: '**ताइरुकुम म'अकुम** — **तुम्हारा शगुन तुम्हारे साथ ही है।**' क्या जवाब है। तुम **हमें** बद-क़िस्मती कहते हो? **तुम्हारी ना-हमवारी तुम्हारा अपना किरदार है, तुम्हारे अंदर लिए फिरते।**

'**अ इन ज़ुक्किर्तुम** — क्या इस लिए कि **तुम्हें नसीहत की गई? बल अन्तुम क़ौमुम्-मुस्रिफ़ून** — बल्कि, तुम एक हद से बढ़ने वाली क़ौम हो।'

और अब, बेटा, वो लम्हा: '**व जाअ मिन अक़्सल्-मदीनति रजुलंय्यस्'आ** — और **शहर के सब से दूर किनारे** से एक **आदमी दौड़ता** हुआ **आया।**'

बेटा, उस जुमले की हर चीज़ मायने रखती है। वो ताक़त के मरकज़ से न था। वो दूर के किनारे से था — एक आम आदमी, गुमनाम, बिना किसी ओहदे के। और वो **दौड़** रहा था। तमाशा देखने टहलता हुआ नहीं। दौड़ता हुआ, क्योंकि वो आदमी जो अल्लाह की तरफ़ बुला रहे थे क़त्ल किए जाने वाले थे।

'**क़ाल या क़ौमित्-तबि'उल्-मुर्सलीन** — उसने कहा: **ऐ मेरी क़ौम, रसूलों की पैरवी करो!**'

और देखिए वो कैसे दलील देता है, बेटा — ख़ालिस, निहत्था कर देने वाली मंतिक़ से: '**इत्तबि'ऊ मल्-ला यस्अलुकुम अज्रंव्-व हुम मुह्तदून** — **उन की पैरवी करो जो तुम से कोई मुआवज़ा नहीं माँगते**, और वो हिदायत-याफ़्ता हैं।'

बेटा, यही इम्तेहान वो अपनी क़ौम को पेश करता है: **देखो किस का फ़ायदा है।** ये आदमी तुम से कुछ नहीं चाहते — न पैसा, न ओहदा, न ताक़त। सच के सिवा उनका और क्या मक़्सद हो सकता है?

'**व मा लिय ला अ'अ्बुदुल्-लज़ी फ़तरनी व इलैहि तुर्जऊन** — और **मैं उस ज़ात की इबादत क्यों न करूँ जिसने मुझे बनाया**, और जिसकी तरफ़ तुम लौटाए जाओगे?'

बेटा, ग़ौर कीजिए वो अपने ईमान को एक दावत में कैसे बदल देता है। वो ये नहीं कहता 'तुम्हें उसकी इबादत करनी चाहिए' — वो कहता है '**मैं** उस ज़ात की इबादत **क्यों न** करूँ जिसने मुझे बनाया?' ये नर्म-तर है, और इस से बहस करना कहीं मुश्किल।

'**अ अत्तख़िज़ु मिन दूनिही आलिहतन इंय्युरिदिनिर्-रह्मानु बि-ज़ुर्रिल्-ला तुग़्नि 'अन्नी शफ़ा'अतुहुम शै-अंव्-व ला युन्क़िज़ून** — क्या मैं उसके सिवा माबूद बनाऊँ? अगर अर्-रहमान मुझे कोई नुक़्सान पहुँचाना चाहे तो उनकी सिफ़ारिश मेरे कुछ काम न आएगी, न वो मुझे बचा सकेंगे। **इन्नी इज़ल्-लफ़ी ज़लालिम्-मुबीन** — बेशक, मैं तब खुली गुमराही में हूँगा।'

'**इन्नी आमन्तु बि-रब्बिकुम फ़स्म'ऊन — बेशक, मैं तुम्हारे रब पर ईमान लाया, तो मेरी सुनो।**'

बेटा, उसने इसे खुले-आम एलान किया, एक ऐसी भीड़ के सामने जिसने ठीक इसी बात पर लोगों को संगसार करने की धमकी दी थी। और रिवायात कहती हैं कि उन्होंने उसे इसी के लिए क़त्ल कर दिया।

'**क़ीलद्-ख़ुलिल्-जन्नह — कहा गया: जन्नत में दाख़िल हो जा।**'

बेटा, चार लफ़्ज़ — और उसकी मौत और जन्नत के दरमियान सब कुछ छोड़ दिया गया। उसने कहा 'मैं ईमान लाया', और अगली दर्ज चीज़ दाख़िल होने की दावत है।

और अब, बेटा, कहानी की सब से ख़ूबसूरत लाइन — और ये तुम्हें बताती है कि वो कैसा आदमी था:

'**क़ाल या लैत क़ौमी य'अ्लमून — उसने कहा: काश मेरी क़ौम जानती! — बिमा**

ग़फ़र ली रब्बी व ज'अलनी मिनल्-मुक्रमीन — कि मेरे रब ने मुझे कैसे **बख़्शा** और मुझे **मो'अज़्ज़ज़ों** में **रखा।**'

बेटा, उन्होंने अभी अभी उसे क़त्ल किया था। और जन्नत में उसका पहला ख़याल **उन** के बारे में था — बदले का नहीं, उनके आने वाले अज़ाब पर तसल्ली का नहीं। **उसने चाहा कि काश वो देख सकते जो उसने पाया, ताकि वो भी इसे चाहें।**

बेटा, यही वो है जो सच्ची ईमान एक दिल के साथ करती है। इब्न अब्बास (रज़ि0) ने उसके बारे में कहा: उसने अपनी ज़िंदगी में अपनी क़ौम को नसीहत की, और अपनी मौत के बाद भी उन्हें नसीहत की।

और यही मेयार है उस हर शख़्स के लिए जो ये पैग़ाम उठाता है: **तुम लोगों का भला चाहते हो चाहे उन्होंने तुम्हें इसके उल्टा चाहने की हर वजह दे दी हो।**

हर एक एक मदार में तैरता हुआ

फिर सूरह तख़्लीक़ की निशानियों की तरफ़ मुड़ती है, बेटा, और हमें क़ुरआन की कुछ सब से हैरत-अंगेज़ आयतें देती है।

'**व आयतुल्-लहुमुल्-अर्ज़ुल्-मैततु अह्यैनाहा व अख़्रज्ना मिन्हा हब्बन फ़-मिन्हु यअ्कुलून** — और उनके लिए एक निशानी **मुर्दा ज़मीन** है: हम उसे ज़िंदा करते और उस से अनाज निकालते हैं, और उस में से वो खाते हैं।'

'**अ व लम यरौ अन्ना ख़लक़्ना लहुम मिम्मा 'अमिलत ऐदीना अन्'आमन फ़-हुम लहा मालिकून** — क्या उन्होंने नहीं देखा कि हमने उनके लिए, **हमारे हाथों** के बनाए से, मवेशी बनाए, और वो उनके मालिक हैं?'

'**व आयतुल्-लहुमुल्-लैलु नस्लख़ु मिन्हुन्-नहार फ़-इज़ा हुम मुज़्लिमून** — और उनके लिए एक निशानी **रात** है: हम उस से **दिन** को **खींच लेते** हैं, और अचानक वो अंधेरे में होते हैं।'

बेटा, '**नस्लख़ु**' — हम उसे उतार देते हैं, छील देते हैं, जैसे खाल उतारी जाती है। शाम के लिए क्या तस्वीर: दिन की रौशनी दुनिया से पीछे छीली जाती हुई।

'**वश्-शम्सु तज्री लि-मुस्तक़र्रिंल्-लहा** — और **सूरज** अपने एक **ठिकाने** की तरफ़ **चलता** है — **ज़ालिक तक़्दीरुल्-'अज़ीज़िल्-'अलीम** — ये ग़ालिब, जानने वाले की तक़्दीर है।'

'**वल्-क़मर क़द्दर्नाहु मनाज़िल हत्ता 'आद कल्-'उर्जूनिल्-क़दीम** — और **चाँद**, हमने उसके **मराहिल** मुक़र्रर किए, यहाँ तक कि वो **पुरानी, सूखी, टेढ़ी खजूर की डाली** की तरह लौट आता है।'

बेटा, क्या मुक़ाबला। महीने के आख़िर का पतला हिलाल एक पुरानी खजूर की डाली से तशबीह दिया गया — पीला, पतला, टेढ़ा। जिसने दोनों देखे हैं वो जानता है ये कितना ठीक है।

और फिर वो आयत जिसने सदियों से पढ़ने वालों को हैरान किया: '**लश्-शम्सु यम्बग़ी लहा अन तुद्रिकल्-क़मर व लल्-लैलु साबिक़ुन्-नहार** — न **सूरज** के बस में है कि **चाँद** को **जा पकड़े**, न **रात दिन से आगे** निकल सकती — **व कुल्लुन फ़ी फ़लकिंय्यस्बहून** — **और सब एक एक मदार में तैर रहे हैं।**'

बेटा, 'कुल्लुन फ़ी फ़लकिंय्यस्बहून' — हर एक एक '**फ़लक**', एक मदार में, और फ़ेल है '**यस्बहून**': **तैरना।** लुढ़कना नहीं, घसीटा जाना नहीं — तैरना, जैसे कोई चीज़ किसी माद्दे में आज़ादी से हरकत करती है।

और दो और बातें ग़ौर कीजिए। पहली, आयत कहती है हर एक अपने **ख़ुद** के मदार में है, और वो आपस में न टकराते न एक दूसरे से आगे निकलते — एक कामिल तरतीब वाले निज़ाम का बयान। दूसरी, फ़ेल 'यस्बहून' वो शक्ल है जो अरबी में अक़्ल वाली मख़्लूक़ के लिए इस्तेमाल होती है, जिसे उलमा ने क़ुरआन के उन बयानों से जोड़ा कि सारी मख़्लूक़ अपने रब की तस्बीह करती है।

बेटा, ये एक सहराई शहर में चौदह सदी पहले पढ़ा गया, उन लोगों को जो इसे बयान न कर सकते थे, और इसे कभी दुरुस्त करने की ज़रूरत नहीं पड़ी।

सलाम — एक रहीम रब की तरफ़ से एक बात

फिर सूरह उस दिन का बयान करती है: एक वाहिद धमाका, लोग अपनी क़ब्रों से

उठते 'हमें हमारी सोई जगह से किसने उठाया?' कहते हुए — और जवाब: '**हाज़ा मा व'अदर्-रह्मानु व सदक़ल्-मुर्सलून** — ये वही है जिसका अर्-रहमान ने वादा किया, और रसूलों ने सच कहा।'

'**अल्-यौम ला तुज़्लमु नफ़्सुन शै-अंव्-व ला तुज्ज़ौन इल्ला मा कुन्तुम तअ्मलून** — **आज** किसी जान पर ज़र्रा भर ज़ुल्म न होगा, और तुम्हें सिर्फ़ उस का बदला मिलेगा जो तुम करते थे।'

और फिर जन्नत: '**इन्ना अस्हाबल्-जन्नतिल्-यौम फ़ी शुग़ुलिन फ़ाकिहून** — बेशक, जन्नत वाले, उस दिन, **ख़ुशी से मसरूफ़** होंगे।' बेटा, ग़ौर कीजिए: 'फ़ी शुग़ुल' — मसरूफ़, मशग़ूल। **जन्नत बे-कारी नहीं; ये एक लुत्फ़-भरी मसरूफ़ियत है।**

'**हुम व अज़्वाजुहुम फ़ी ज़िलालिन 'अलल्-अराइकि मुत्तकिऊन** — वो और उनके जोड़े, **सायों** में, आरास्ता **मसनदों** पर, **तकिया** लगाए — **लहुम फ़ीहा फ़ाकिहतुंव्-व लहुम मा यद्द'ऊन** — उनके लिए उस में फल है, और उनके लिए वो है **जो वो माँगें।**'

और फिर, बेटा, पूरी सूरह का उरूज — पाँच लफ़्ज़ जिन्हें बहुत से उलमा ने इस में सब से ख़ूबसूरत आयत समझा:

'**सलामुन क़ौलम्-मिर्-रब्बिर्-रहीम** — **सलाम — एक रहीम रब की तरफ़ से एक बात।**'

बेटा, इस के साथ बैठिए। हर लज़्ज़त गिन दी गई — साया, मसनदें, फल, जो वो माँगें — और फिर अल्लाह एक और चीज़ ज़िक्र करते हैं, और वो उन सब पर भारी है: **वो ख़ुद उनसे बात करते हैं। और उनकी बात सलाम है।**

एक झिड़की नहीं। एक हिसाब नहीं। सलाम, सीधा कहा गया, 'रब्बिर्-रहीम' की तरफ़ से — एक रब जो रहीम है।

बेटा, तसव्वुर कीजिए वो कैसा होगा। हर परेशानी जो आपने कभी उठाई, हर पछतावा, हर वो रात जब आप जागते ये सोचते रहे कि आप बख़्शे जाएँगे या नहीं — और फिर जहानों का रब आपको ज़ाती तौर पर मुख़ातिब करता है और वो लफ़्ज़ है: **सलाम।**

फिर सूरह दूसरी मंज़िल से ख़बरदार करती है — कि शैतान एक खुला दुश्मन था, कि उस दिन आज़ा बोलेंगे: '**अल्-यौम नख़्तिमु 'अला अफ़्वाहिहिम व तुकल्लिमुना ऐदीहिम व तश्हदु अर्जुलुहुम बिमा कानू यक्सिबून** — आज हम उनके मुँह पर **मुहर** लगा देंगे, और उनके **हाथ** हमसे **बात** करेंगे, और उनके **पाँव गवाही** देंगे उस की जो वो कमाते थे।'

बेटा, मुँह — बहानों का आला — पहले बंद किया जाता है।

कौन हड्डियों को ज़िंदा करेगा?

और सूरह ख़त्म होती है, बेटा, एक ऐसी दलील से इतनी सादा कि ये हर चीज़ को ख़ामोश कर देती है।

'**अ व लम यरल्-इंसानु अन्ना ख़लक़्नाहु मिन नुत़्फ़तिन फ़-इज़ा हुव ख़सीमुम्-मुबीन** — क्या इंसान नहीं देखता कि हमने उसे एक **नुत़्फ़े (बूँद)** से बनाया — और फिर अचानक **वो एक खुला झगड़ने वाला**, एक खुला बहस करने वाला है?'

बेटा, तंज़ महसूस कीजिए: उसने एक ऐसी बूँद से शुरू किया जिसे पानी से बहाया जा सकता था — और वो एक ऐसा शख़्स बन कर बड़ा हुआ जो खड़ा हो कर अपने ख़ालिक़ से बहस करता है।

'**व ज़रब लना मसलंव्-व नसिय ख़ल्क़ह** — और वो हमारे लिए एक मिसाल पेश करता है और **अपनी ख़ुद की तख़्लीक़ भूल** जाता है — **क़ाल मंय्युह्यिल्-'इज़ाम व हिय रमीम** — वो कहता है: **हड्डियों को कौन ज़िंदा करेगा जब वो बोसीदा हो चुकी हों?**'

रिवायात कहती हैं कि एक आदमी नबी ﷺ के पास एक पुरानी, भुरभुरी हड्डी ले कर आया, उसे अपने हाथ में मसल दिया, धूल हवा में उड़ाई, और मज़ाक़न ये सवाल पूछा।

और अल्लाह का जवाब आया: '**क़ुल युह्यीहिल्-लज़ी अन्शअहा अव्वल मर्रह** — **कहो: उन्हें वो ज़िंदा करेगा जिसने उन्हें पहली बार बनाया** — **व हुव बि-कुल्लि ख़ल्क़िन 'अलीम** — और वो हर तख़्लीक़ को जानने वाला है।'

बेटा, पूरा ए'तिराज़ एक जुमले में ढेह जाता है: **तुम वहाँ खड़े हो, कुछ से नहीं बने, ये पूछते हुए कि तुम्हें किसी चीज़ से दोबारा कौन बना सकता है।**

'**अल्लज़ी ज'अल लकुम मिनश्-शजरिल्-अख़्ज़रि नारन फ़-इज़ा अन्तुम मिन्हु तूक़िदून** — वो जिसने तुम्हारे लिए **हरे दरख़्त** से **आग** बनाई, और फिर उस से तुम **सुलगाते** हो।'

बेटा, ये निशानी देखिए: आग, सब से सूखी चीज़, एक **हरे**, ज़िंदा, तर दरख़्त से पैदा की गई। वो एक दूसरे में से मुतज़ाद निकालते हैं। तो धूल में से ज़िंदगी निकालना उनके लिए कुछ नया नहीं।

'**अ व लैसल्-लज़ी ख़लक़स्-समावाति वल्-अर्ज़ बि-क़ादिरिन 'अला अंय्यख़्लुक़ मिस्लहुम** — क्या वो ज़ात जिसने आसमानों और ज़मीन को बनाया इस पर **क़ादिर** नहीं कि उनके जैसा (दोबारा) बनाए? **बला व हुवल्-ख़ल्लाक़ुल्-'अलीम** — **क्यों नहीं**, और वो बड़ा ख़ालिक़, जानने वाला है।'

'**इन्नमा अम्रुहू इज़ा अराद शै-अन अंय्यक़ूल लहू कुन फ़-यकून** — **उसका हुक्म, जब वो किसी चीज़ का इरादा करे, बस ये है कि वो उसे कहे: हो जा — और वो हो जाती है।**'

बेटा, यही जवाब है हर उस चीज़ का जिसे आप अपनी ज़िंदगी में ना-मुमकिन समझते हैं। कोई 'अमल नहीं। कोई जद्दो-जहद नहीं। **एक लफ़्ज़।**

'**फ़-सुब्हानल्-लज़ी बि-यदिही मलकूतु कुल्लि शै-इंव्-व इलैहि तुर्जऊन** — तो **पाक** है वो जिसके **हाथ** में **हर चीज़** की **बादशाहत** है, और **उसी की तरफ़ तुम लौटाए जाओगे।**'

बेटा, ये सूरह या-सीन की आख़िरी आयत है, और यहीं पूरी सूरह ले जा रही थी: **हर चीज़ उसके हाथ में है, और हर चीज़ उसी की तरफ़ वापस जा रही है। दोनों जानते हुए जियो।**

इस सूरह से क्या सीखा

1. अल्लाह सिर्फ़ तुम्हारे अमल नहीं बल्कि तुम्हारे निशान भी लिखते हैं — जो तुम्हारे बाद जारी रहता है वो अभी भी लिखा जा रहा है।

2. वो आदमी बनो जो शहर के सब से दूर किनारे से दौड़ता आया: आम, गुमनाम, और ख़ामोश रहने को ना-तैयार।

3. एक दाई को उस से परखो जो वो तुम से माँगता है: 'उन की पैरवी करो जो तुम से कोई मुआवज़ा नहीं माँगते।'

4. 'काश मेरी क़ौम जानती' — सच्ची ईमान तुम्हें उन के लिए भी भलाई चाहना सिखाती है जिन्होंने तुम्हें नुक़्सान पहुँचाया।

5. हर एक अपने मदार में, तैरता हुआ, कभी न टकराता — तुम्हारे ऊपर की तरतीब कोई इत्तेफ़ाक़ नहीं।

6. जन्नत की सब से बड़ी लज़्ज़त एक लफ़्ज़ है जो सीधा तुमसे कहा जाएगा: 'सलाम' — एक रहीम रब की तरफ़ से।

7. वो हरे दरख़्त से आग और धूल से ज़िंदगी निकालते हैं: जो भी तुम ना-मुमकिन समझते हो उसे सिर्फ़ 'कुन' चाहिए।

या अल्लाह, हमें उन में बना दीजिए जो नसीहत की पैरवी करते और बिन-देखे आप से डरते हैं, और हमें 'सलामुन क़ौलम्-मिर्-रब्बिर्-रहीम' सुनने दीजिए। आमीन।